EPC-2

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur, Bihar

Maulana Mazharul Haque Teacher's Training College

Subject – EPC- 2
Enhancing Professional capacities

Topic
Different Types Of Veena Instrument

Project Members

Name :- Supriya ray
Roll No :- 230078

Name :- Nandita Kri
Roll No:- 230060

Name :- Dolly Kri
Roll No:- 230097

Name :- Kajal Kri
Roll No :- 230064

Name :- Raju Kr
ROLL No:- 230067

ACKNOWLEDGEMENT

हम अपने अध्यापिका सुश्री सविता कुमारी का
सहृदय धन्यवाद करना चाहते हैं की उन्होंने
मुझे इतना शिक्षाप्रद Project बनाने का अवसर
प्रदान किया। इस Project से विभिन्न वीणा
उपकरणों के बारे में विस्तृत ज्ञानार्जन का अवसर
मिला।

हम अपने माता-पिता को भी धन्यवाद
प्रेषित करने की कोशिश करूंगी। जिनकी विशेष
सहयोग हमें Project तैयार करने के दौरान मिला।
इस Project के लिए विशेष
प्रकार से हम अपने Teammate का भी धन्यवाद
अदा करना चाहूँगी जिन्होंने अपनी कड़ी लगन से
इस Project के बनाने का कार्य किया।

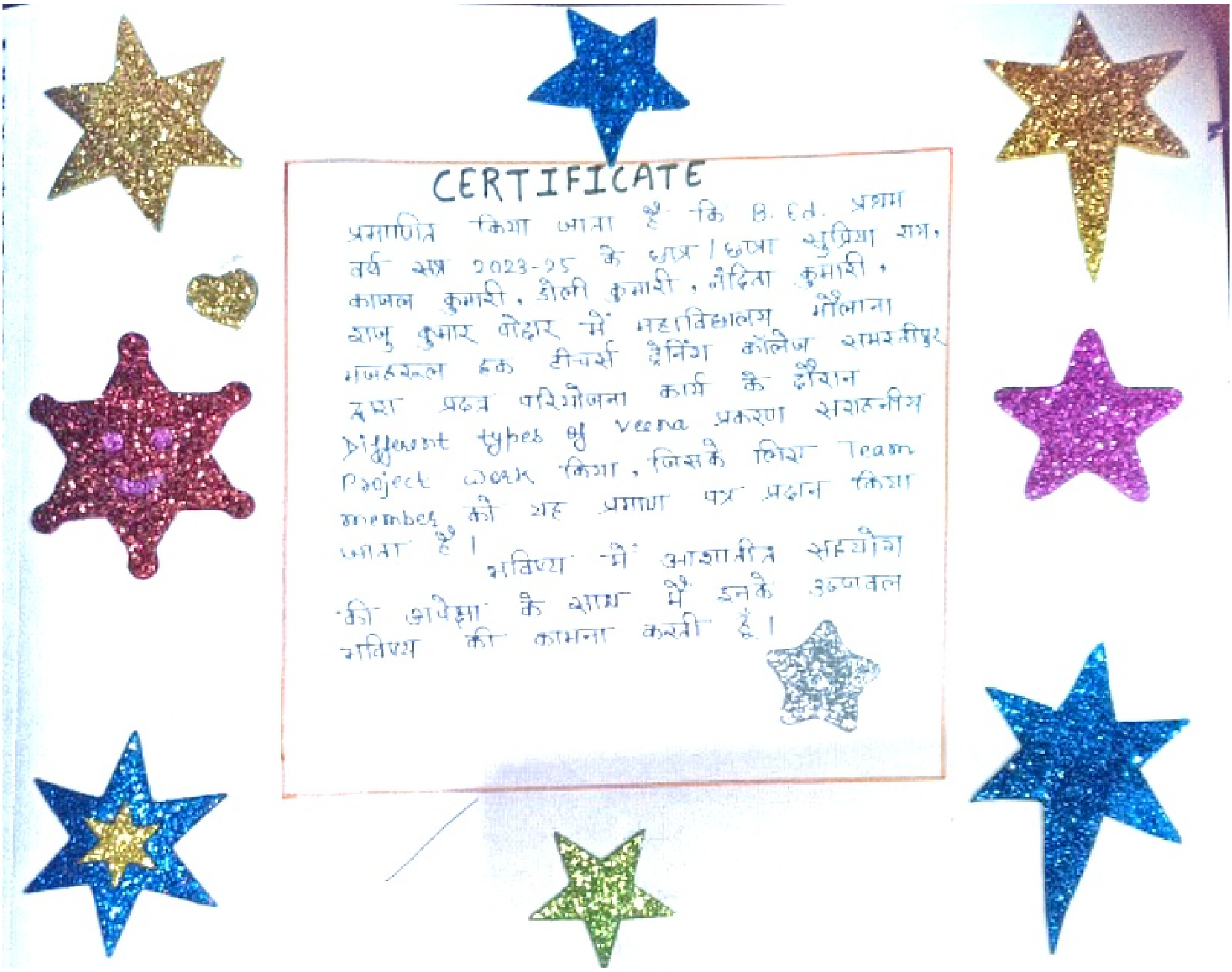

CERTIFICATE

प्रमाणित किया जाता है कि B.Ed. प्रथम वर्ष सत्र 2023-25 के छात्र/छात्रा सुप्रिया राम, काजल कुमारी, डोली कुमारी, नंदिता कुमारी, शानु कुमार पोद्दार में महाविद्यालय मौलाना मजहरुल हक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज समस्तीपुर द्वारा प्रदत्त परियोजना कार्य के दौरान सराहनीय Different types of veena प्रकरण Team Project work किया, जिसके लिए member को यह प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

भविष्य में आशातीत सहयोग की अपेक्षा के साथ मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

विचित्र वीणा

वीणा

वीणा, जिसे वीणा भी कहा जाता है (संस्कृत: वीणा आईएएसटी: वीणा), भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न कॉर्डोफोन उपकरणों में से एक है। प्राचीन संगीत वाद्ययंत्र कई रूपों में विकसित हुए, जैसे ल्यूट, सितार और धनुषाकार वीणा। कई क्षेत्रीय डिजाइनों के अलग-अलग नाम हैं जैसे रुद्र वीणा, सरस्वती वीणा, विचित्र वीणा और अन्य।

स्ट्रिंग साधन

अन्य नामों	वीणा
वर्गीकरण	स्ट्रिंग उपकरण
विकसित	वीणा का प्रयोग कम से कम 1000 ईसा पूर्व से भारतीय लिखित अभिलेखों में तार वाले वाद्ययंत्रों पर किया जाता रहा है। नाम का उपयोग करने वाले उपकरणों में धनुषाकार वीणा और संगीतमय धनुष, ल्यूट, मध्ययुगीन स्टिक जिथर और ट्यूब जिथर, झुके हुए कॉर्डोफोन, फ्रेटलेस ल्यूट, हिंदुस्तानी बिन और सरस्वती वीणा के रूप में शामिल हैं।

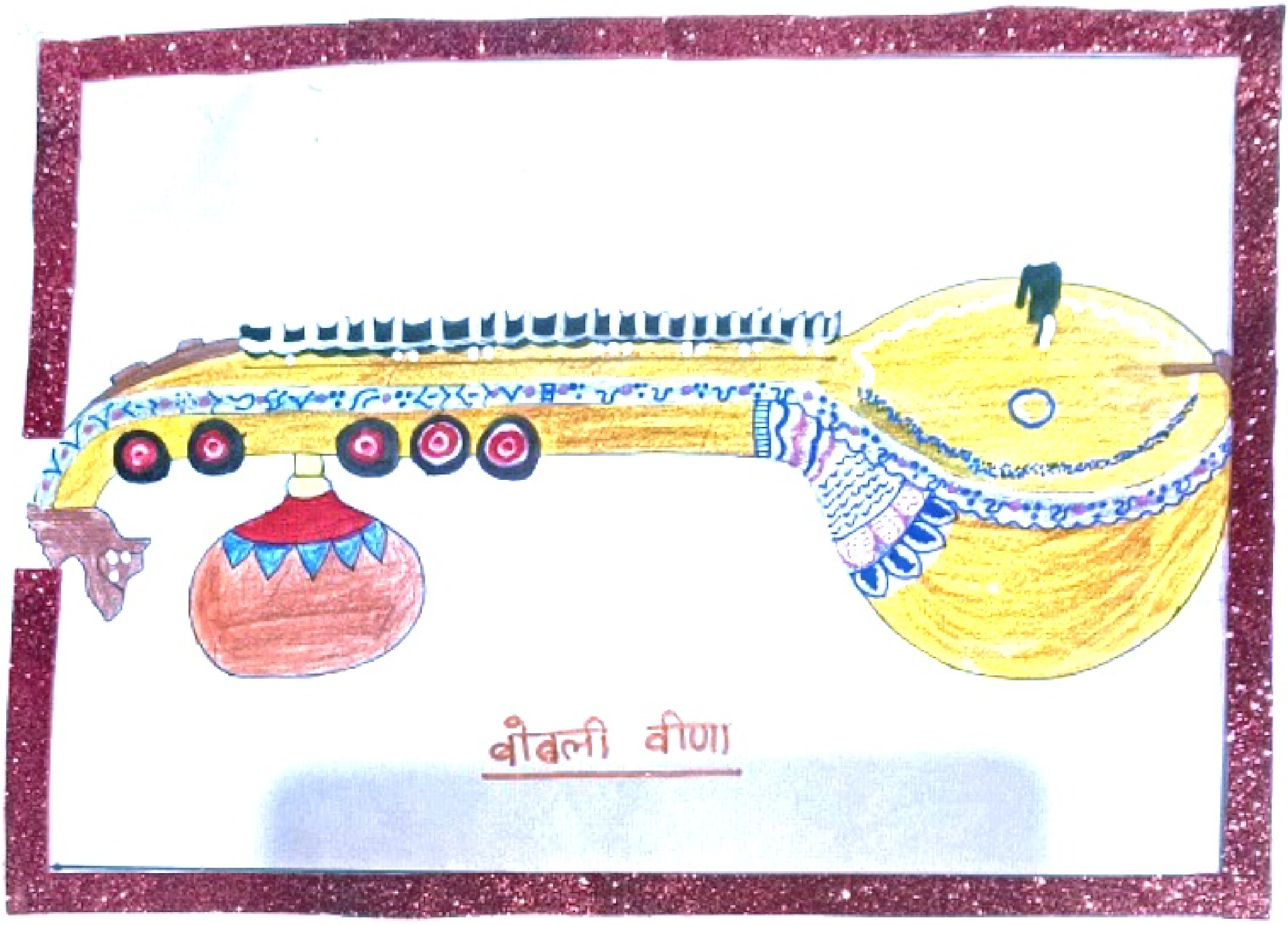
बोबली वीणा

संबंधित उपकरण

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त उत्तर भारतीय रुद्र वीणा एक छड़ी है। संगीतकार के माप में फिट होने के लिए लगभग 3.5 से 4 फीट (1 से 1.2 मीटर) लंबा, इसमें एक खोखला शरीर और प्रत्येक छोर के नीचे दो बड़े गूंजने वाले लौकी होते हैं।

इसमें चार मुख्य तार हैं जो मधुर है, और तीन सहायक ड्रोन तार हैं। बजाने के लिए, संगीतकार पहली और दूसरी अँगुलियों में पहने गए पेलट्रम से राग के तारों को नीचे की ओर खींचता है, जबकि ड्रोन के तारों को बजाने वाले हाथ की छोटी उंगली से बजाया जाता है।

संगीतकार जब चाहे, गूँजते तारों को मुक्त हाथ की उंगलियों से रोक देता है। आधुनिक समय में उत्तर भारतीय प्रदर्शनों में आमतौर पर वीणा का स्थान सितार ने ले लिया है।

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त दक्षिण भारतीय सरस्वती वीणा एक वीणा है। यह एक लंबी गर्दन वाली, नाशपाती के आकार की ल्युटिया है, लेकिन उत्तर भारतीय डिजाइन की निचली लौकी के बजाय, इसमें नाशपाती के आकार का लकड़ी का टुकड़ा होता है। इसमें भी 24 फ्रीट्स 4 मेलोडी स्ट्रिंग्स और

किनरी वीणा

तीन ड्रोन स्ट्रिंग्स है, और इसे समान रूप से बजाया जाता है। यह शास्त्रीय कर्नाटक संगीत में एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय वाद्ययंत्र बना हुआ बना हुआ है।

एक चिन्नित, मड़की हुई वीणा के रूप में, वीणा पूर्ण तीन - ऑक्टेव रेंज में पिच उत्पन्न कर सकती है। इन भारतीय वाद्ययंत्रों की लंबी, खोखली गर्दन का डिजाइन भारतीय रागों में पाए जाने वाले पोर्टामेंटो प्रभाव और लेगाटो आभूषणों की अनुमति देता है।

यह भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक लोकप्रिय वाद्ययंत्र रहा है, और कला और शिक्षा की हिंदू देवी, सरस्वती की प्रतिमा में शामिल होने के कारण भारतीय संस्कृति में उसकी पूजा की जाती है।

प्रकार

किसी भी तार वाद्ययंत्र का सामान्य नाम होने के कारण, वीणा के कई प्रकार होते हैं। कुछ महत्वपूर्ण हैं :—

- रुद्र वीणा एक अन्लाहट वाली वीणा है, जिसमें एक छड़ी के नीचे दो बड़े समान आकार के तुंबा (अनुनादक) लगे होते हैं। इस वाद्ययंत्र को एक लौकी को घुटने पर और दूसरे को कंधे के ऊपर झुकाकर बजाया जाता है। पौराणिक कथाओं में कहा गया है

पिनाका वीणा

की यह उपकरण भगवान शिव द्वारा बनाया गया था। यह 6वीं शताब्दी के बाद के मध्यकालीन युग का आविष्कार हो सकता है।

संगीत विद्वानों के अनुसार — "यह उपकरण अधिक प्राचीन है, और 6वीं से 10वीं शताब्दी के इसके पुराने नाम संस्कृत में विभिन्न धातुओं से बने सात तारों के साथ सिर्फ एक अनुनादक था।"

- सरस्वती वीणा एक और वीणा है, और भारतीय परंपराओं विशेषकर हिंदू धर्म में अत्यधिक प्रचलित है। इसे अक्सर चित्रित किया जाता है विभिन्न आकार के दो अनुनादकों के रूप में दिखाया जाता है।

पहले राजा रघुनाथ नायक के काल से इसे "रघुनाथ वीणा" के नाम से जाना जाता था। इसे किसी के शरीर पर लगभग 45° के कोण पर और संगीतकार की बायीं जांघ के ऊपर छोटी लौकी को पकड़कर बजाया जाता है। यह वाद्ययंत्र दक्षिण भारत के एक प्राचीन वाद्ययंत्र से संबंधित है, जिसे अब केरल कहा जाता है, जहाँ प्राचीन संस्करण को नन्दुनी या नंदुरुनी कहा जाता है।

- विचित्र वीणा और चित्र वीणा या गोट्टुवाद्यम में झल्लरें नहीं हैं। यह गायक के गुनगुनाने के करीब लगता है। विचित्र वीणा को अंडाकार या ग्लास कांच के टुकड़े से बजाया जाता है, जिसका उपयोग प्रदर्शन के दौरान नाजुक संगीत आभूषण और स्लाइड बनाने

गायत्री वीणा

के लिए तर्षों को रोकने के लिए किया जाता है।

- सितार एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ तीन तार होता है। किंवदंतियों में कहा गया है कि दिल्ली सल्तनत के अमीर खुसरो ने त्रितंत्री वीणा का नाम बदलकर सितार कर दिया, लेकिन इसकी संभावना नहीं है क्योंकि अकबर के इतिहासकारों द्वारा बनाई गई संगीत वाद्ययंत्रों की सूची में सितार या सीतारिया का कोई उल्लेख नहीं है। सितार भारतीय मुस्लिम संगीतकारों के बीच लोकप्रिय रहा है।

- सुरबहार सितार को बेस ट्यून संस्करण है, इस तथ्य के कारण बनाया गया कि सितार वादक सरस्वती वीणा की तरह बेस ट्यून बजाना चाहते थे।

- अलापिनी वीणा ऐतिहासिक एक तार वाली स्तिकजिदर शैली की वीणा, एक तार वाली एक-तंत्री वीणा से छोटी। इसमें एक आधा लौकी गुंजयमान यंत्र था, जो डोरी तोड़ते समय वादक की छाती में दब जाता था।

- बोब्बिली वीणा, एक विशेष सरस्वती वीणा है, जो लकड़ी के एक टुकड़े से बनाई गई है। इसका नाम आंध्र प्रदेश में बोब्बिली के नाम पर रखा गया, जहाँ इस वाद्य यंत्र की उत्पत्ति हुई थी।

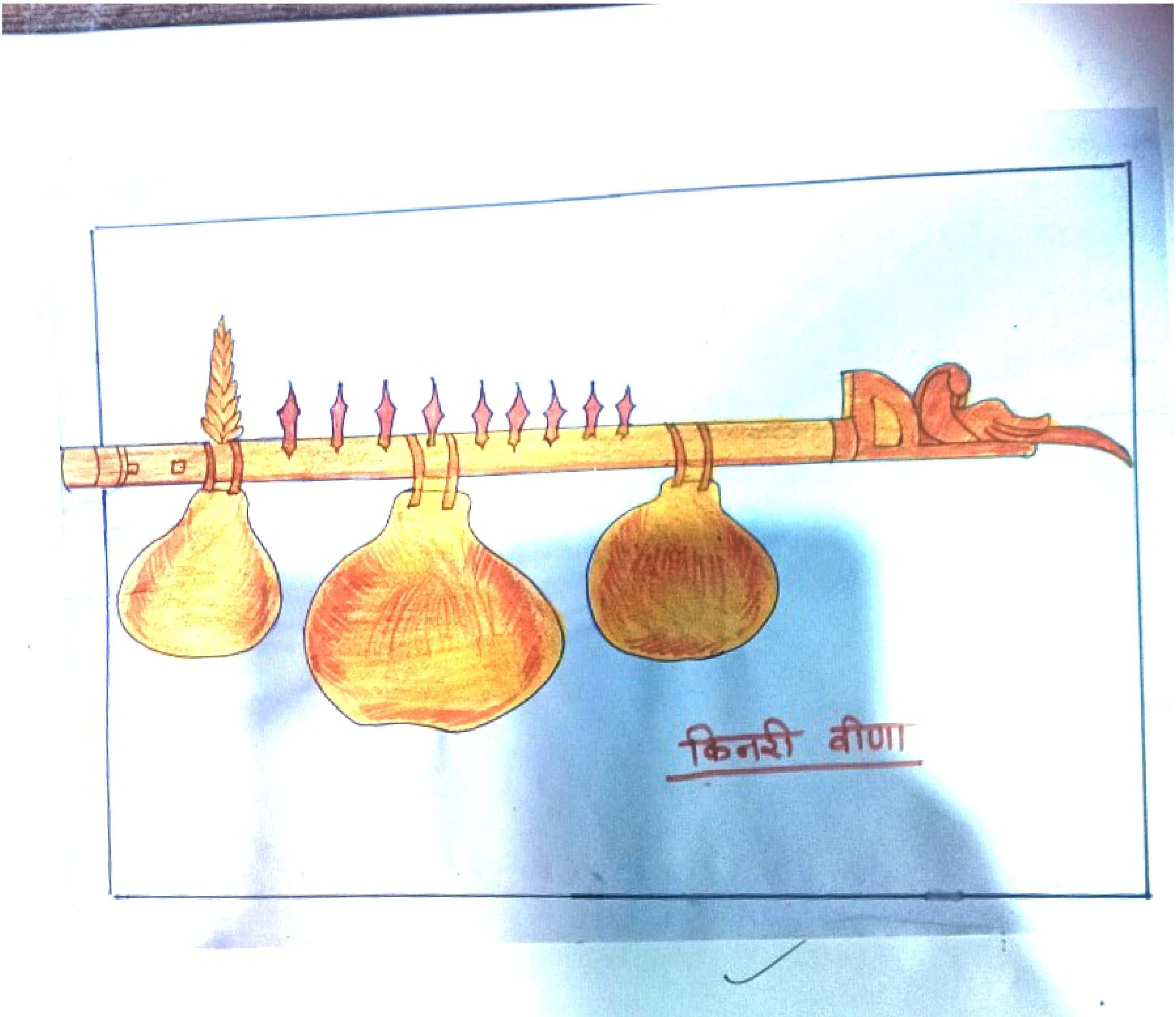
किनरी वीणा

- चित्रा वीणा, एक आधुनिक 21-तार वाला ... रहित वीणा, जिसे गोट्टुवाद्यम या कोट्टुवाद्य भी कहा जाता है।

- चित्र वीणा, एक-तार वाली धनुषाकार वीणा, प्राचीन काल से लगभग 5वीं शताब्दी ईस्वी तक मुख्यधारा में रही।

- कच्छपी वीणा, जिसे अब कछुआ सितार कहा जाता है, एक अनुनादक के रूप में कछुए या कछुए के लकड़ी के मॉडल के साथ बनाई गई है।

- किन्नरी वीणा, शारंगदेव द्वारा लिखित संगीत रत्नाकर (1210-1247 ई. में लिखित) में वर्णित तीन वीणा प्रकारों में से एक है। उल्लेखित अन्य दो थी अलापिनी वीणा और एक-तंत्री वीणा। अनुनादकों के लिए एकाधिक लौकी के साथ ट्यूब सितार। जीवित संग्रहालय उदाहरणों में, केंद्रिय लौकी खुली होती है जहाँ यह खिलाड़ी की छाती पर दबाव डालती है, जैसे कैरसई बिन या अलापिनी वीणा। शारंगी से संबंधित है। ऐतिहासिक

- पिनाकी वीणा, सदृश झुकी हुई वीणा। तार रुद्र वीणा के साथ छड़ी या नारियल के खोल को घुमाकर नोट निकाले जाते थे।

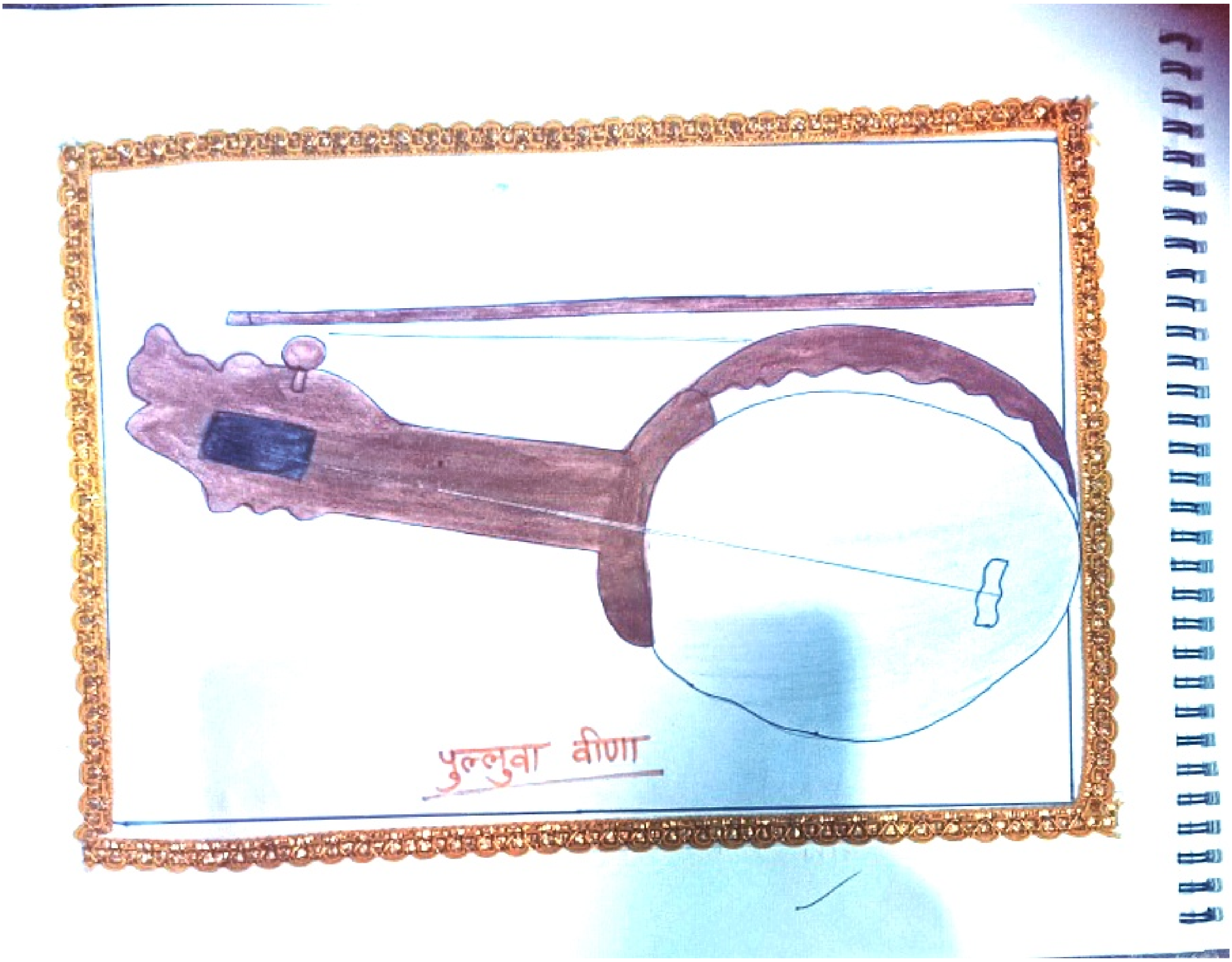
पुल्लुवा वीणा

- पुल्लुवा वीणा, केरल की पुल्लुन जनजाति द्वारा धार्मिक समारोहों और पुल्लुन पट्टू के उपयोग की जाती है।

- मत्तकोकिला वीणा (जिसका अर्थ है "नशीली कोयल") एक 21-तार वाला वाद्ययंत्र, जिसका उल्लेख साहित्य में किया गया है, प्रकार अप्रमाणित है। संभवतः एक प्राचीन वीणा (धनुषाकार वीणा) था एक रुद्रा।

- मोहन वीणा, एक संशोधित सरोद है, जो 1940 के दशक में सरोद वादक राधिका मोहन मैत्रा द्वारा बनाया गया था। संशोधित हवाईयन गिटार और सरोद से बना है।

- मयूरी वीणा, जिसे ताऊस भी कहा जाता है। अरबी तव्वुस अर्थ मोर से लिया गया है। गुंजयमान यंत्र के रूप में मोर की नक्काशी होती है।

- मुख्य वीणा, एक फूंकने वाला वाद्य यंत्र।

- नागा वीणा, सजावट के लिए साँप की नक्काशी वाला एक वाद्ययंत्र।

- नागुला वीणा, बिना अनुनादक वाला वाद्ययंत्र।

- शततंत्री वीणा (संतूर)

मोहन वीणा (गियर)

- गायत्री वीणा (केवल एक तार के साथ)
- सप्तंत्री वीणा
- रंजन वीणा
- सागर वीणा, एक पाकिस्तानी वाद्ययंत्र है, जिसे 1970 में प्रमुख पाकिस्तानी वकील रजा काजिम द्वारा बनाया गया था।
- सरदिया वीणा, जिसे अब सरोद कहा जाता है।
- तंजावुर वीणा, एक विशेष सरस्वती वीणा, जो लकड़ी के एक टुकड़े से बनाई गई है। इसका नाम तमिलनाडु के तंजावुर के नाम पर रखा गया, जहाँ इस वाद्ययंत्र की उत्पत्ति हुई थी।

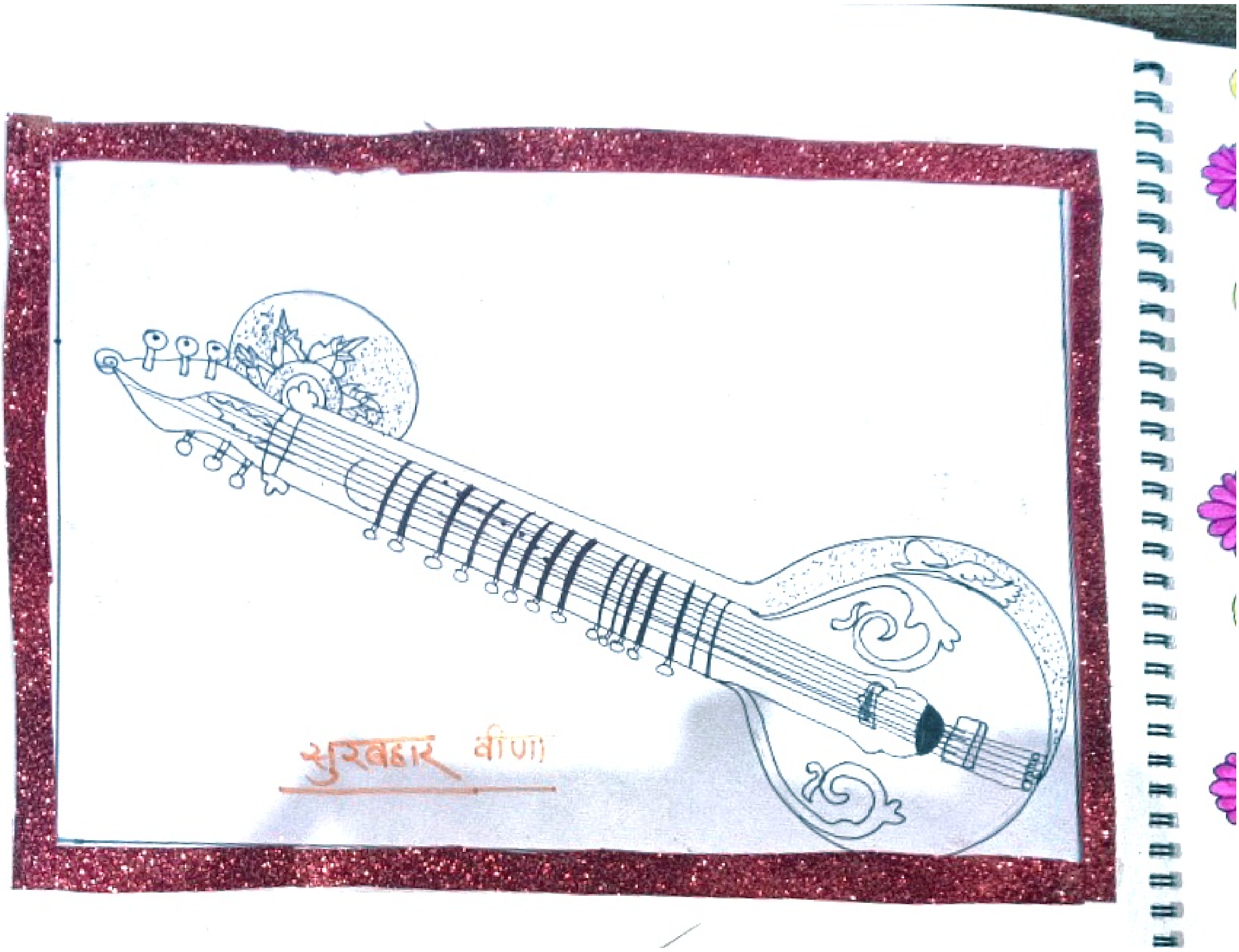
सुरबहार वीणा

वीणा बजाने की तकनीक

कई अलग-अलग तकनीकें हैं, कुछ स्कूलों या शिक्षकों के लिए मानक हैं, जबकि अन्य अधिक व्यक्तिगत हैं। तकनीकें रागों की विशिष्ट विशेषताओं और उनके अलंकरणों को भी दर्शाती हैं, जिन्हें गमक कहा जाता है। नीचे कुछ सबसे सामान्य वीणा वादन तकनीकें दी गई हैं।

दाया हाथ :—

- मीटी एक प्लकिंग तकनीक है जहाँ तारों को तर्जनी और मध्यमा उंगलियों के नीचे की ओर मारा जाता है। हालाँकि, चूँकि किसी भी उंगली से नीचे की ओर झुकना किसी भी अन्य उंगली से अप्रभेद्य है, यह एक ऐसा शब्द है जिसे आम तौर पर नीचे की ओर खींचने की गति के लिए लागू किया जाता है।
- वली एंत उंगली, आमतौर पर तर्जनी या मध्यमा उंगली से ऊपर की ओर खींचने की एक तकनीक है।
- कत्तरी दो तारों को एक के बाद एक त्वरित क्रम में छोड़कर एक अनोखी दोहरी ध्वनि उत्पन्न करती है।

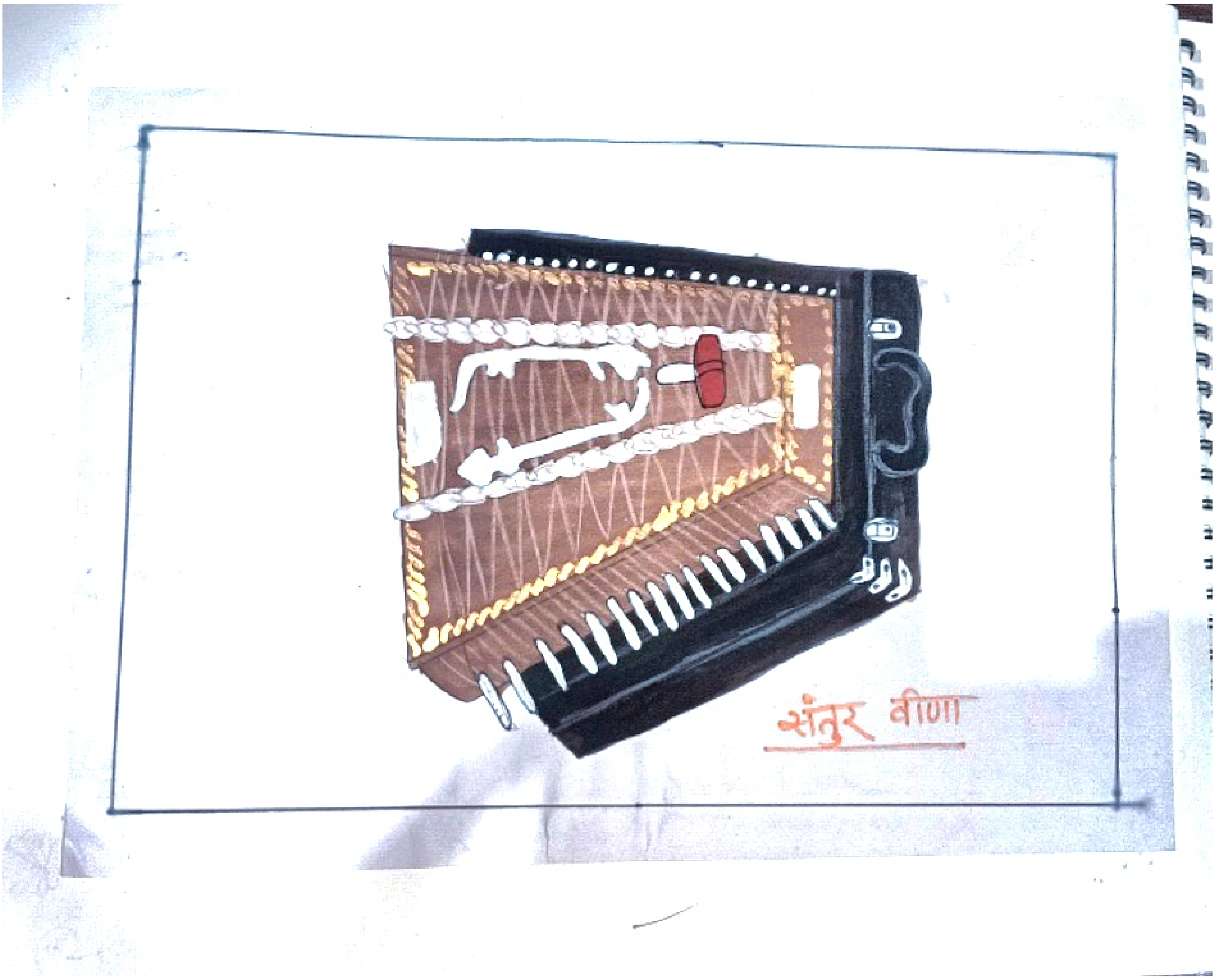
संतुर वीणा

- कुत्रा वह तकनीक है जिसमें तारों को उंगली, आमतौर पर अंगूठे के नाखून से तोड़ा जाता है, लेकिन हमेशा नहीं। यह पिवस से बनी ध्वनि की तुलना में अधिक नरम ध्वनि उत्पन्न करता है।

<u>बायाँ हाथ:-</u>

- पोर्टमेंटो एक लोकप्रिय तकनीक है जिसमें उंगलियों को एक झल्लाहट से उठाकर दूसरे झल्लाहट पर डालने के बजाय एक झल्लाहट से दूसरे झल्लाहट पर फिसलना शामिल है। यह तकनीक दो अलग-अलग ध्वनियों के बजाय दो स्वरों को जोड़ती है।
- निचले झल्लाहट की स्थिति की ओर खींचना ध्वनियों को एक साथ जोड़ने की एक और तकनीक है।

बायीं उंगली को खींचने और रोकने की तकनीक पर अनोखी ध्वनि पैदा करती है, जो दाहिने हाथ की तकनीक से प्राप्त ध्वनि से अलग होती है। इसमें स्ट्रिंग पर रखते हुए उंगली को झल्लाहट से उठाना शामिल है।

रंजन वीणा।

प्रसिद्ध वीणा वादक

अतीत और वर्तमान के कई प्रसिद्ध वीणा वादक हैं। यहाँ कुछ सबसे लोकप्रिय वीणा वादक हैं :-

- मीरा कृष्णन।
- असद अली खान
- असित कुमार बनर्जी
- सिद्धार्थ बनर्जी
- अश्वती थिरुनल राम वर्मा
- बहाउद्दीन मोहिउद्दीन डागर
- डॉ. जयंती कुमारेश
- जयश्री जयराज
- जयराज कृष्णन
- वैनिका पारुथी
- ज्योति हेगड़े

मयूर वीणा

- कल्पना स्वामीनाथन
- निर्मला राजशेखर
- पुष्पा श्रीवत्सन
- रघुनाथ मानेट

Scanned with OKEN Scanner

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

Mathurapur, Samastipur, Bihar

Scanned with OKEN Scanner

Submitted By

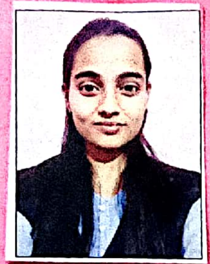

Rupa Kumari
230019

Kajal Kumari
230081

Rimjhim Kumari
230088

Twinkle Kumari
230012

Nitu Kumari
230066

Rajani Kumari
230054

Simmy Kumari
230053

Submitted To

Savita Kumari

Scanned with OKEN Scanner

EPC 2: Drama and Art in Education

Various forms of Art in India.

- **Painting:-**
  - Madhubani painting
  - Pattachitra
  - Kalamkari
- **Dance:-**

Index........

Scanned with OKEN Scanner

Painting

भारतीय चित्रकला एक जीवंत और विविध परंपरा है जो देश की सम्‍मद्ध सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक विविधता और ऐतिहासिक विरासत को दर्शाती है। हजारों वर्षों से चली आ रही भारतीय चित्रकला में शैलियों, तकनीकों और विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिनमें से प्रत्येक विभिन्न क्षेत्रीय, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित है। भारतीय चित्रकला सदियों से विकसित हुई है, जो अपने रचनाकारों की रचनात्मकता आध्यात्मिकता और सौंदर्य संबंधी संवेदनाओं को समाहित करती है।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training

-: मधुबनी पेंटिंग :-

मधुबनी चित्रकला, पारंपरिक रूप से मधुबनी शहर के आसपास के गाँवों की महिलाओं द्वारा की जाती थी इसे मिथिला पेंटिंग भी कहा जाता है। यह कला नेपाल में तराई क्षेत्र के आस-पास के हिस्सों तक विस्तृत है। मधुबनी चित्रों की उत्पत्ति रामायण काल से मानी जाती है। जब मिथिला के राजा ने अपने राज्य के लोगों को सीता और राम के विवाह के अवसर पर अपने घरों की दिवारों और फर्श को रंगने के लिये कहा था। लोगों का मानना था कि ऐसा करने से देवता प्रसन्न होते हैं। मधुबनी चित्रकला को मिथिला चित्रकारी भी कहते हैं। मधुबनी चित्रकला मिथिला की एक फोक पेंटिंग है। इस शैली के चित्र दो प्रकार के होते हैं—

(i) भित्ति चित्र
(ii) अरिपन

- इसमें अलग-अलग समय और स्थान को इंगित करने के लिए चित्रों को क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर खंडो में विभाजित किया गया है।
- इसमें देवी-देवताओं के चित्र संक्षिप्त और अक्सर विकृत होते हैं। इनमें आमतौर पर राधा-कृष्ण, मधुबनी गणेश चित्रकला आदि शामिल होती है।

Maulana Mazharul

Scanned with OKEN Scanner

-: पट्टचित्र पेंटिंग :-

पट्टचित्र ओडिशा की पारम्परिक चित्रकला है। इन चित्रों में हिन्दु देवी - देवताओं को दर्शाया जाता है। 'पट्ट' का अर्थ 'कपड़ा' होता है।

पट्टचित्र कला प्रमुख रूप से भगवान जगरनाथ से प्रेरित है, जिन्हे भगवान कृष्ण का अवतार माना जाता है। इन चित्रों का निर्माण सूती कपड़े की दो परतों को लेही द्वारा आपस में चिपका कर तैयार की गई सतह पर किया जाता है। कपड़े से इस प्रकार तैयार की गई सतह पट था पट्ट कहलाती है। पेंटिंगस में उपयोग किए गए सभी रंग प्राकृतिक है और पेंटिंगस चित्रकारों यानि उड़िया पेंटर द्वारा पुरी तरह से पुराने पारंपरिक तरीके से बनाई गई है। रघुराजपुर भारत के ओड़िशा के पुरी जिले में विरासत शिल्प गाँव है, जो अपने मास्टर पट्टचित्रा चित्रकारों के लिए जाना जाता हैं।

Maulana Mazharul Haque Teachers ... ESTD 2010

Scanned with OKEN Scanner

कलमकारी पेंटिंग :-

Introduction:- ● कलमकारी नाम की उत्पत्ति :- फारसी शब्द कलम और कारी (शिल्प कौशल) से हुई है।

- कला की इस विधा के लिए आंध्र प्रदेश हर जगह मशहूर है। प्रमुख रूप से चित्तूर जिले के श्रीकालाहस्ती और कृष्णा जिले के मछलीपट्टनम कलमकारी हैं।
- श्रीकालाहस्ती कलमकारी की पूरी प्रक्रिया में सत्रह चरण शामिल हैं जैसे कि ब्लॉक बनाना, उसके बाद कपड़ा उपचार, छपाई और धुलाई आदि।
- कलमकारी की श्रीकालाहस्ती शैली का उपयोग ज्यादातर धार्मिक मिथकों और महाकाव्यों को कपड़ों पर बनाने के लिए किया जाता हैं।
- यह अपने उत्तम दर्जे और कलात्मक बॉर्डर और पल्लू के लिए प्रसिद्ध हैं।
- कलमकारी रंग अधिकतर वनस्पती रंगों से बनाए जाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Dance

नृत्य का इतिहास, मानव इतिहास जितना ही पुराना है। इसका प्राचीनतम ग्रंथ भरत मुनि का नाट्यशास्त्र है। लेकिन इसके उल्लेख वेदों में भी मिलते हैं, जिससे पता चलता है कि प्रागैतिहासिक काल में नृत्य की खोज हो चुकी थी। इस काल में मानव जंगलों में स्वतंत्र विचरता था।

Maulana Mazharul Haque

Scanned with OKEN Scanner

भरतनाट्यम् :-

भरतनाट्यम् को सबसे प्राचीन नृत्य माना जाता है। इस नृत्य को तमिलनाडु में देवदासियों द्वारा विकसित व प्रसारित किया गया था। शुरू में इस नृत्य को देवदासियों के द्वारा विकसित होने के कारण उचित सम्मान नहीं मिल पाया, लेकिन 20वीं सदी के शुरू में ई. कृष्णा अय्यर और रुक्मणी देवी के प्रयासों से इस नृत्य को दुबारा स्थापित किया गया। भरतनाट्यम् के दो भाग होते हैं, इसे दो अंशों में सम्पन्न किया जाता हैं- नृत्य और अभिनय। नृत्य शरीर के अंगों से उत्पन्न होता है, इसमें रस, भाव और काल्पनिक अभिव्यक्ति जरूरी हैं। भरतनाट्यम् में शारीरिक प्रक्रिया को तीन भागों में बांटा जाता है - समभंग, अभंग, त्रिभंग भरतनाट्यम् में नृत्य का क्रम होता है। इसकी उत्पत्ति लगभग 2000 साल पहले हुई थीं।

पौराणिक मान्यता :-

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं ने ब्रह्मा से आग्रह किया कि एक ऐसे वेद का निर्माण किया जाये जिसके उल्लेख हो कि यह नृत्य देवताओं के लिए होगा और जब भी देवताओं को संगीत और नृत्य का लुत्फ उठाना हो, तो भरतनाट्यम् ही देखा करेंगे। कहा जाता हैं, कि स्वर्ग में अप्सराओं के समूहों के साथ मिलकर सभी देवता भरतनाट्यम् ही करते थे। धीरे - धीरे इस नृत्य का प्रसार मंदिरों में भी होने लगा और जब भी किसी देवता को खुश करना होता था, तो इसी नृत्य का सहारा लिया जाता था।

झिझिया नृत्य :-

झिझिया मिथला का एक प्रमुख लोक नृत्य हैं। दुर्गा पुजा के मौके पर इस नृत्य को किया जाता हैं। इस नृत्य में कुवारीं लड़कियां अपने सिर पर जलते दिए एवं छिद्र वाली घड़ा को लेकर नाचती हैं। झिझिया नृत्य राजा चित्रसेन एवं उनकी रानी के प्रेम-प्रसंगों पर आधारित हैं।

- यह नृत्य विजय की देवी दुर्गा के प्रति भक्ति प्रदर्शित करने के साथ-साथ किसी के परिवार, बच्चों और समाज को चुड़ैलो और काले जादु से बचाने के किया जाता हैं।
- नृत्य में अपने प्रकार के गीत और लय होते हैं। यह नृत्य झिझिया गीत गाते हुए एक निश्चित स्थान पर गोल-गोल घुमकर किया जाता हैं। गीतों के साथ ढोल, मंजीरा आदि लोक वाद्ययंत्रों का संगीत होता हैं।
- मिथिला में झिझिया नृत्य की अपनी मौलिकता, पहचान और इतिहास हैं। गगरी पर धधकते अंगारे के साथ नृत्य करना अपने आप में शौर्य और कला का अलौकिक प्रदर्शन हैं।
- समाज में चुड़ैलो की मौजूदगी के कारण 7वीं और 8वीं शताब्दी के आसपास पूर्वजों ने चुड़ैलों से लड़ने के लिए एक अनोखा नृत्य किया और झिझिया नृत्य की नीव रखी। यह घटस्थापना के दिन से विजय दशमी तक लगातार दस शामों तक महिलाओ और लड़कियों द्वारा किया जाता हैं।

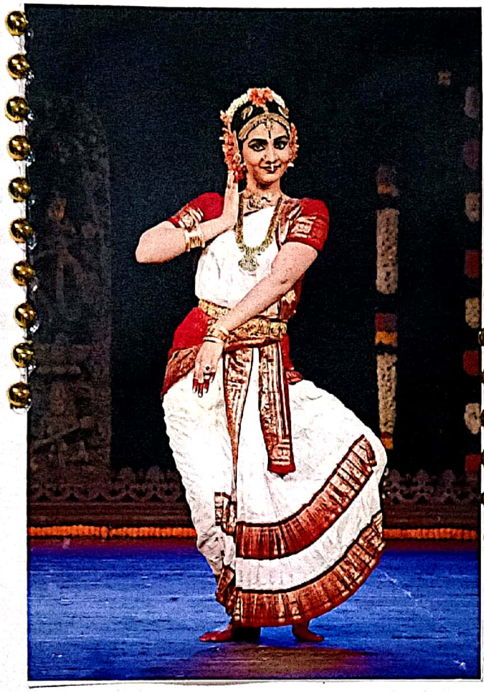

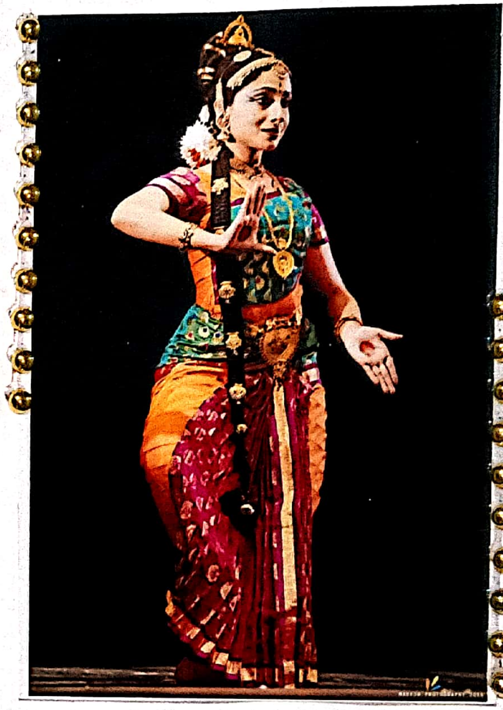

Maulana Mazharul Haque

Scanned with OKEN Scanner

कुचिपुड़ी नृत्य :-

कुचिपुड़ी नृत्य भारत के सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्यों में से एक है। इस नृत्य की उत्पत्ति कब हुई इसका कोई प्रमाण नहीं है लेकिन, कहा जाता है कि यह हजार साल से भी अधिक प्राचीन और दक्षिण भारत में इसे खास पसंद किया जाता था। कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश, भारत की प्रसिद्ध नृत्य शैली है। यह पुरे दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। इस नृत्य का नाम कृष्णा जिले के दिवि तालुक में स्थित कुचिपुड़ी गाँव के ऊपर पड़ा, जहाँ के रहने वाले ब्राह्मण इस पारंपरिक नृत्य का अभ्यास करते थे। परम्परा के अनुसार कुचिपुड़ी नृत्य मूलतः केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था और वह भी केवल ब्राह्मण समुदाय के पुरुषों द्वारा। ये ब्राह्मण परिवार कुचिपुड़ी के भागवतथालू कहलाते थे।

कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक :-

कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक के बारे में जिक्र करने से पहले आपको यह बता दें कि कुचिपुड़ी में कलाकार द्वारा गायन और नृत्य दोनों शामिल हैं। भगवान को समर्पित इस नृत्य को शुरू करने से पहले पवित्र जल छिड़कने, अगरबत्ती जलाने और भगवान से प्रार्थना करने जैसे कुछ अनुष्ठान शामिल हैं। कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक हैं- लक्ष्मी नारायण, राजारेड्डी, राधा रेड्डी, यामिनी रेड्डी और कौशल्या जैसे लोगों का जिक्र मिलता हैं।

Maulana Mazharul Haque Teachers

Architecture

भारत के स्थापत्य की जड़े यहाँ के इतिहास, दर्शन एवं संस्कृति में निहित है। भारत की वास्तुकला यहाँ की परम्परागत एवं बाहरी प्रभावों का मिश्रण है। भारतीय वास्तु की विशेषता यहाँ की दिवारों के उत्कृष्ट और प्रचुर अलंकरण में है।

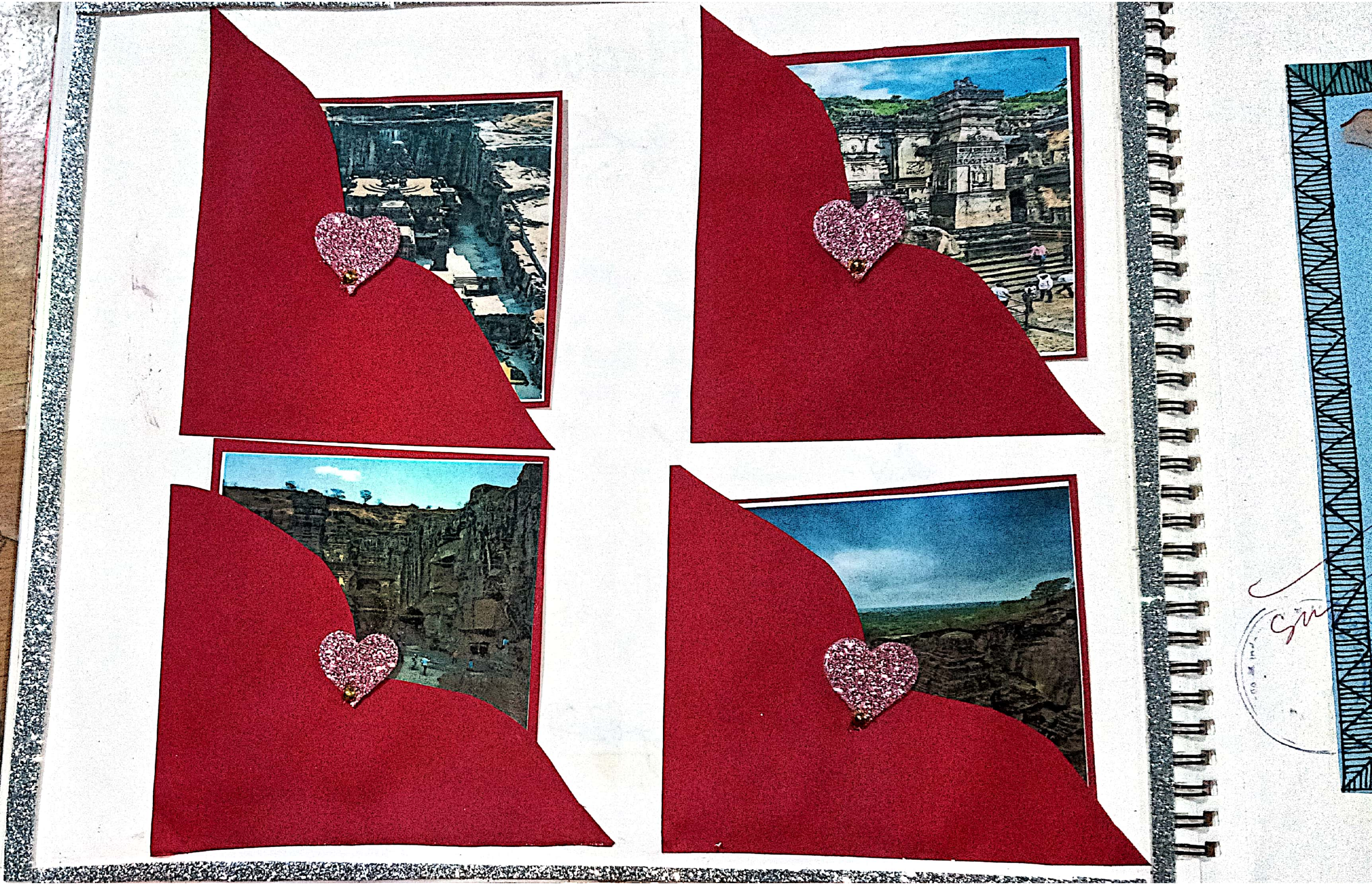

Scanned with OKEN Scanner

कैलाश मंदिर :— Introduction :- ● भारत के सबसे महान स्मारकों में से एक, ठोस चट्टान से बना यह आश्चर्यजनक मंदिर, राजा कृष्ण प्रथम द्वारा 760ई० में शिव के हिमालयी निवास माउण्ट कैलाश का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया था। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यह कार्य साहसिक था।

- 3 विशाल खाइयाँ खड़ी चट्टान के ऊपर खोदी गई, इस प्रक्रिया में मंदिर के आकार लेने और इसकी उल्लेखनीय मूर्तिकला सजावट को जोड़ने से पहले हथौड़े और छेनी से 200000 टन चट्टान को हटाना शामिल था।
- मंदिर में कई जटिल नक्काशीदार पैनल हैं, जिसमें रामायण, महाभारत और कृष्ण के साहसिक कार्यों के दृश्य दर्शाए गए हैं।
- दक्षिणपूर्वी गैलरी में 10 विशाल और शानदार पैनल हैं, जो भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाते हैं।
- **एथेंस में पार्थेनन के दोगुने क्षेत्र को कवर करने वाला और फिर आधा ऊँचा होने वाला कैलाश एक इंजीनियर चमत्कार है, जिसे त्रुटि के लिए शून्य मार्जिन के साथ सीधे सिर से निष्पादित किया गया था।**

Scanned with OKEN Scanner

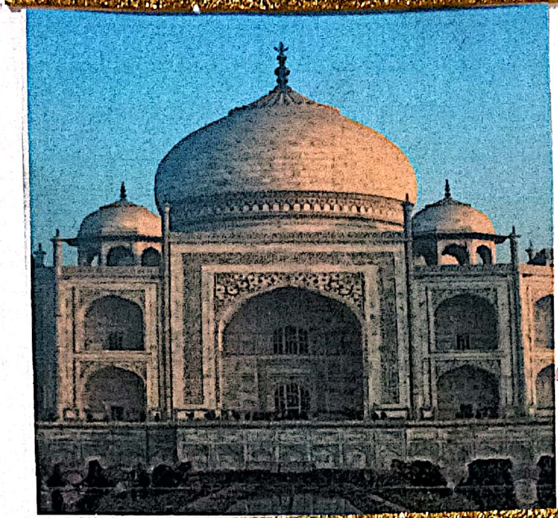

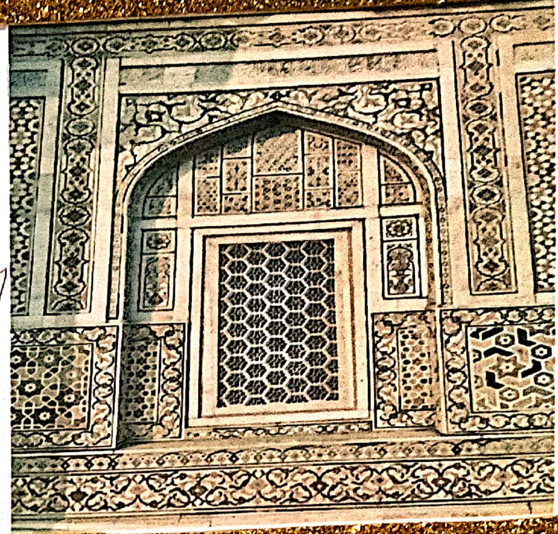

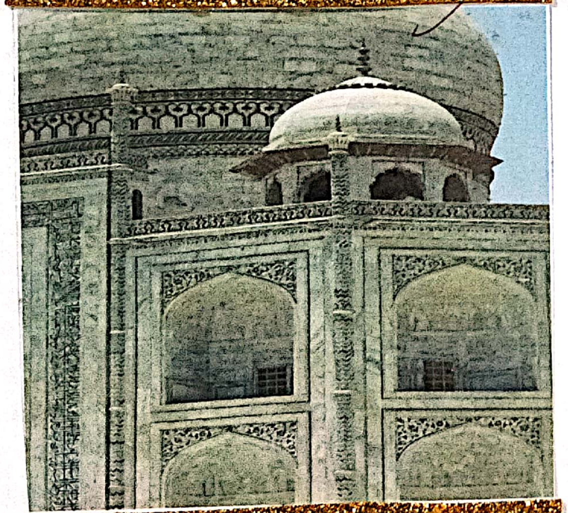

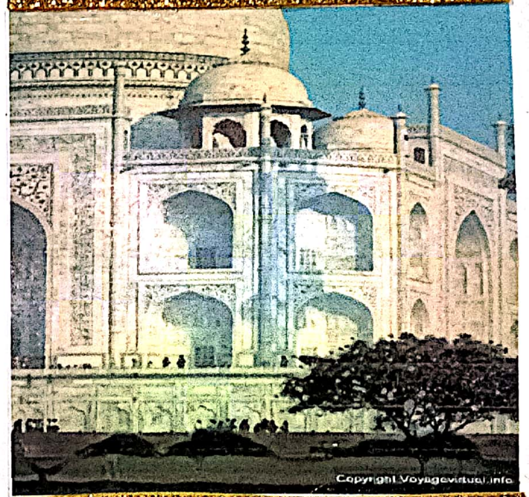

Scanned with OKEN Scanner

ताजमहल

- ताजमहल इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का बेहतरीन और सबसेपरिष्कृत उदाहरण प्रस्तुत करता हैं।
- इसकी उत्पत्ति इसके आयोग की गतिशील परिस्थितियों और भारत के बड़े हिस्से पर इस्लामी मुगल साम्राज्य के शासन की संस्कृति और इतिहास में निहित हैं।
- व्याकुल मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पसंदीदा पत्नियों में से एक मुमताज महल की मृत्यु के बाद इस परियोजना को शुरू किया।
- ताजमहल इमारतों और उद्यानों का एक व्यापक परिसर हैं, जो 22.44 हेक्टेयर (55.5 एकड़) में फैला हुआ हैं। और इसमें सहायक मकबरा, वाटरवर्क्स बुनियादी ढांचा शामिल हैं।
- ताज महल का निर्माण आगरा में यमुना नदी के दक्षिणी तट पर 1632 ई० में शुरू हुआ और 1648 ई० तक काफी हद तक पूर्ण हो गया।

Scanned with OKEN Scanner

सूर्य मंदिर

- सूर्य मंदिर भारत के ओडिशा राज्य के कोणार्क में स्थित मंदिर जो हिन्दू सूर्य देवता को समर्पित हैं।
- इसका निर्माण 13 वीं शताब्दी में पत्थर से किया गया था।
- सूर्य मंदिर हिन्दू उड़ीसा वास्तुकला का शिखर हैं और अपनी मूर्तिकला नवाचारों और नक्काशी की गुणवत्ता के मामले में अद्वितीय हैं।
- पाठ्य साक्ष्य इंगित करते हैं, कि पूर्वी गंगा राजवंश के नरसिम्हा प्रथम (जिसने 1238 और 1264 के बीच शासन किया था) ने 1250 में मंदिर का निर्माण किया थी।
- सूर्य मंदिर की योजना में एक पंक्ति में तीन खंड हैं: एक मुख्य मंदिर एक प्रवेश द्वार और प्रार्थना कक्ष से जुड़ा हुआ है; इसके सामने और इससे अलग एक स्तंभयुक्त नृत्य कक्ष हैं।
- सूर्य मंदिर को 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल नामित किया गया था, और रेत हटाने और प्रवेश कक्ष को बहाल करने की एक परियोजना 2022 में शुरू की गई थी।

MUSIC

भारतीय संगीत प्राचीन
काल से भारत में सुना
और विकसित होता है।
इस संगीत का प्रारंभ वैदिक
काल से भी पूर्व का है।
इस संगीत का मूल स्त्रोत
वेदो को माना जाता है।
हिन्दू परंपरा में ऐसा
मानना है कि ब्रह्मा ने
नारद मुनि को संगीत
वरदान में दिया था।

Maulana Mazharul Haque Teachers

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Folk music

- वैदिक साहित्य, जो 1500 ईसा पूर्व तक जाता है, में भारतीय लोक संगीत का पहला वर्णन शामिल है।
- कुछ शिक्षाविदों और उद्योग पेशेवरों का यह भी तर्क है कि भारतीय लोक संगीत उतना ही पुराना हो सकता है जितना कि यह देश।
- लोक गीतों का उपयोग बाद में मनोरंजन के लिए और महत्त्वपूर्ण अवसरों जैसे शादी, बच्चे के जन्म, त्योहारों आदि को मनाने के लिए व्यापक रूप से किया जाने लगा।
- भारत में कागज के आगमन से पहले इन गीतों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव रहा।
- लोक गीतों का उपयोग बाद में मनोरंजन के लिए और महत्त्वपूर्ण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने के किया जाता है।
- ऐतिहासिक ज्ञान को संरक्षित करने के लिए मनुष्यों के उपयोग के लिए कोई ठोस सामग्री उपलब्ध नहीं थी, इसलिए गीतों के माध्यम से मूल्यवान ज्ञान को प्रसारित करना महत्त्वपूर्ण हो गया।

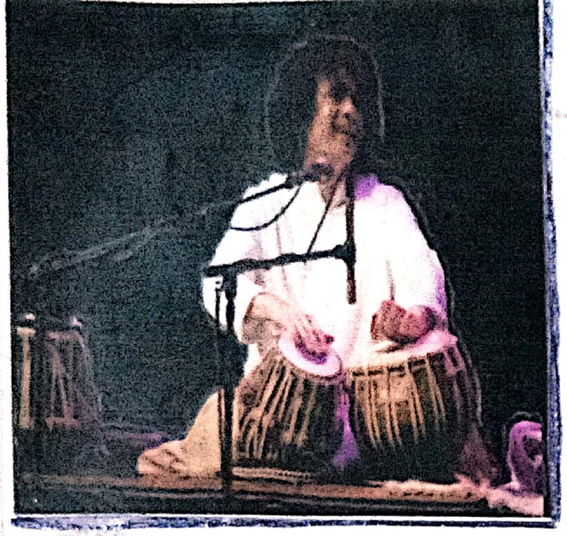

Scanned with OKEN Scanner

शास्त्रीय संगीत

- भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अत्यन्त समृद्ध और प्राचीन संगीत परम्परा है, जो शास्त्रीय वाद्य, गायन और नृत्य को एकत्रित करती है।
- यह एक अद्वितीय और अगम्य भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और भारतीय संगीत की विविधता और गहराई को दर्शाता है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत को दो मुख्य धाराओं में विभाजित किया जा सकता है - हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत।
- हिन्दुस्तानी संगीत उत्तर भारत में प्रचलित है, जबकि कर्णाटक संगीत दक्षिण भारत में विकसित हुआ है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का अत्यन्त महत्त्व है।
- राग एक विशेष संगीतिक स्वर संगति होती है, जिसमें स्वरों की विशेष क्रमबद्धता और संगति होती है।
- शास्त्रीय संगीत में ताल का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- भारतीय फिल्म संगीत में गीतों के शब्द, संगीत और धुन का मिलन भावनात्मक रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Film music

- भारतीय फिल्म संगीत भारतीय संगीत की विविधता और समृद्धता का प्रतिबिम्ब हैं।
- यह एक ऐसा माध्यम हैं, जिसने भारतीय संस्कृति, भावनाओं और जीवन के रंगों को अनेक तरीकों से प्रकट किया हैं।
- भारतीय फिल्म संगीत की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह हैं कि यह समाज में गहरे संवाद का माध्यम बनाता हैं।
- भारतीय फिल्म संगीत में विभिन्न शैलियों का संगम होता हैं, जैसे की शास्त्रीय संगीत, पोप, रॉक, जाज, गजल भारतीय लोक संगीत और भावनात्मक गीत।
- भारतीय संगीत के कुछ विशेष गायक और संगीतकार ऐसे हैं, जो इसकी महानता में योगदान किया हैं।
- लता मंगेशकर, किशोर कुमार, एआ रहमान, एस. डी. बर्मन, रवि आर. डी. बर्मन, गुलजार और शैलेन्द्र ये केवल कुछ नाम हैं, जिनका योगदान भारतीय फिल्म संगीत की शान को बढ़ाता हैं।
- भारतीय फिल्म संगीत का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यह हैं, कि यह भारतीय संगीत संस्कृति को विश्वभर में प्रस्तुत करता हैं।

Textile

परम्परागत रूप से, भारतीय वस्त्र उद्योग, कृषि को छोड़कर एकमात्र उद्योग है जिसने कुशल और अकुशल दोनों प्रकार के श्रमिकों के लिए भारी मात्रा में रोजगार दिया है। यह उद्योग अब भी रोजगार सृजन के मामले में दूसरे स्थान पर है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

-: Kalamkari :-

कलमकारी जिसका अर्थ होता है "कलम से काम किया हुआ है।" इसमें कपड़े को पहले कसैले पदार्थ और भैंस के दूध में भिगोकर कड़ा किया जाता है और फिर धूप में सुखाया जाता है इसके बाद इन कपड़ों पर हाथ से पेंट किया जाता है। ये पेंटिंग सूती कपड़ो पर की जाती हैं। भारत और ईरान के कुछ देश में इसका प्रचलन बहुत ज्यादा हैं। कलमकारी में केवल प्राकृतिक रंगों का ही इस्तेमाल किया जाता है।

भारत में मधुबनी पेंटिंग इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

Maulana Mazharul Haque Teach...

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Chikankari

चिकनकारी एक पारंपरिक कढ़ाई शैली है। जिसकी उत्पति भारत के लखनऊ शहर में हुई। चिकनकारी की पारंपरिक तकनिक का उपयोग सूती कपड़े पर नाजुक, सफेद पर सफेद डिजाइन बनाने के लिए सदियो से किया जा रहा है। चिकनकारी में रनिंग स्टिच, सैटिन स्टिच और स्टेम स्टिच के संयोजन का उपयोग करके जटिल पैटर्न बनाना शामिल है।

चिकनकारी के लिए उपयोग किए जाने वाले कपड़ो में मलमल, कपास और रेशम शामिल है। चिकनकारी के डिजाइनो में पुष्प रूपांकन, पैसले, ज्यामितीय आकृति और अन्य जटिल पैटर्न शामिल है।

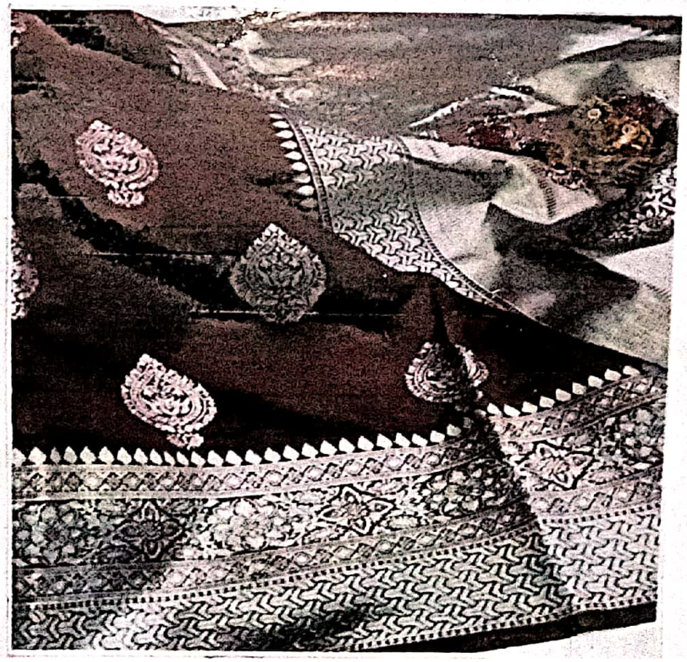

Scanned with OKEN Scanner

Banarasi Silk

Banarasi silk बहुत ही खुबसुरत साड़ी होती है। इसे अक्सर शादी ब्याह के मौके पर स्त्रियाँ पहनती है। रेशम की साड़ियो पर बुनाई के साथ-साथ जरी के डिजाइन मिलाकर बुनने से तैयार होने वाली सुंदर रेशम साड़ी को बनारसी रेशम साड़ी कहते है। पहले इसमें जरी के रूप में शुद्ध सोने का इस्तेमाल होता था।

★ बनारसी सिल्क के प्रकार ★

(a) कटान :—

कटान सिल्क एक प्रकार की रेशम है जो बहुत मजबूत और टिकाऊ होता है। कटान सिल्क मुलायम, हल्का और बेहतरीन गुणवता वाला होता है।

(b) शिफॉन :—

रेशम से बने जॉर्जेट को अत्यधिक मुड़े हुए धागों से बनाया जाता है। यह कपड़ा थोड़ा भारी और टिकाऊ होता है।

Scanned with OKEN Scanner

MAULANA MAZHARUL HAQUE TEACHERS TRAINING COLLEGE
MATHURAPUR, SAMASTIPUR

ACCREDITED WITH GRADE B+ NAAC
1st Cycle

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur, Bihar

Scanned with OKEN Scanner

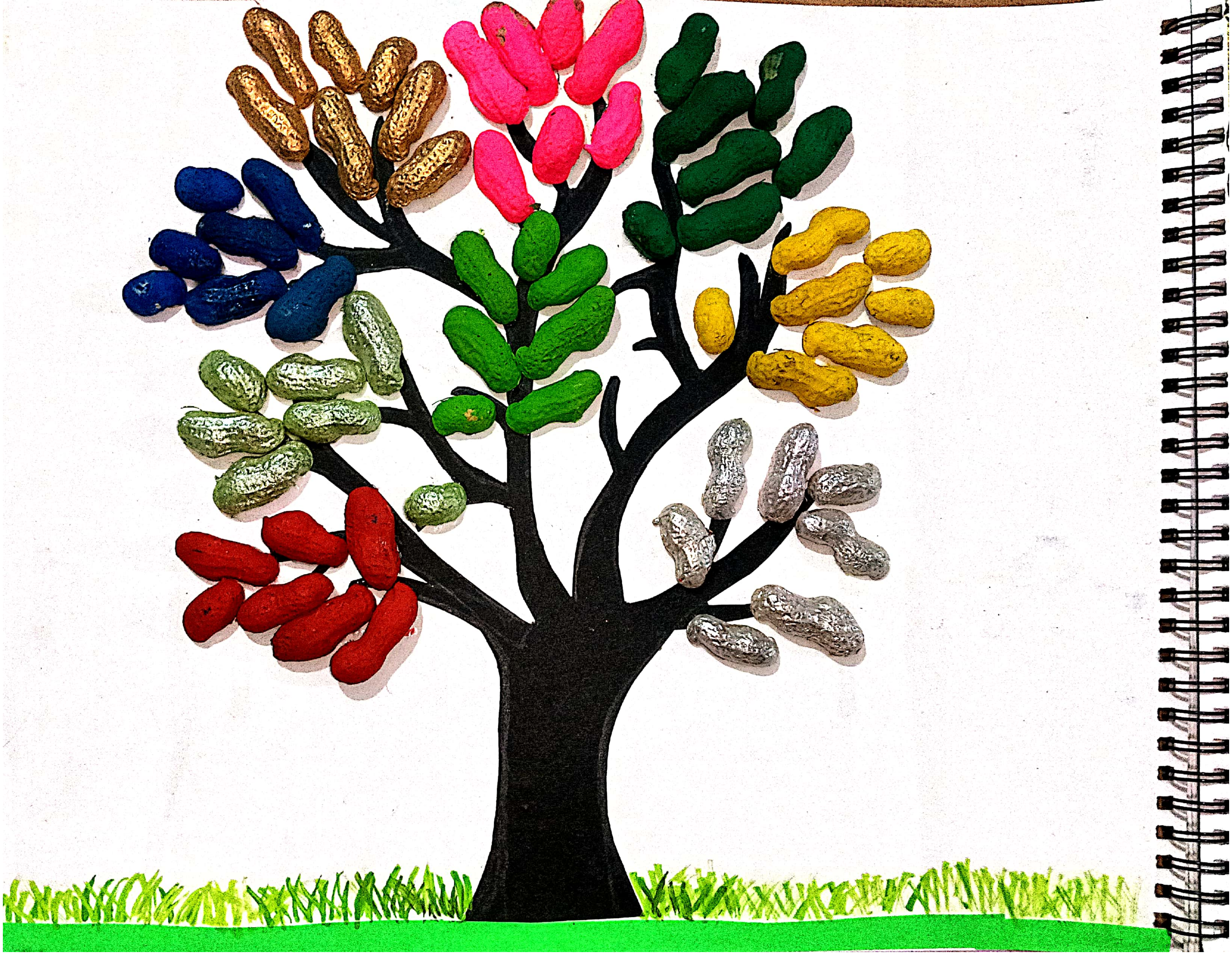

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

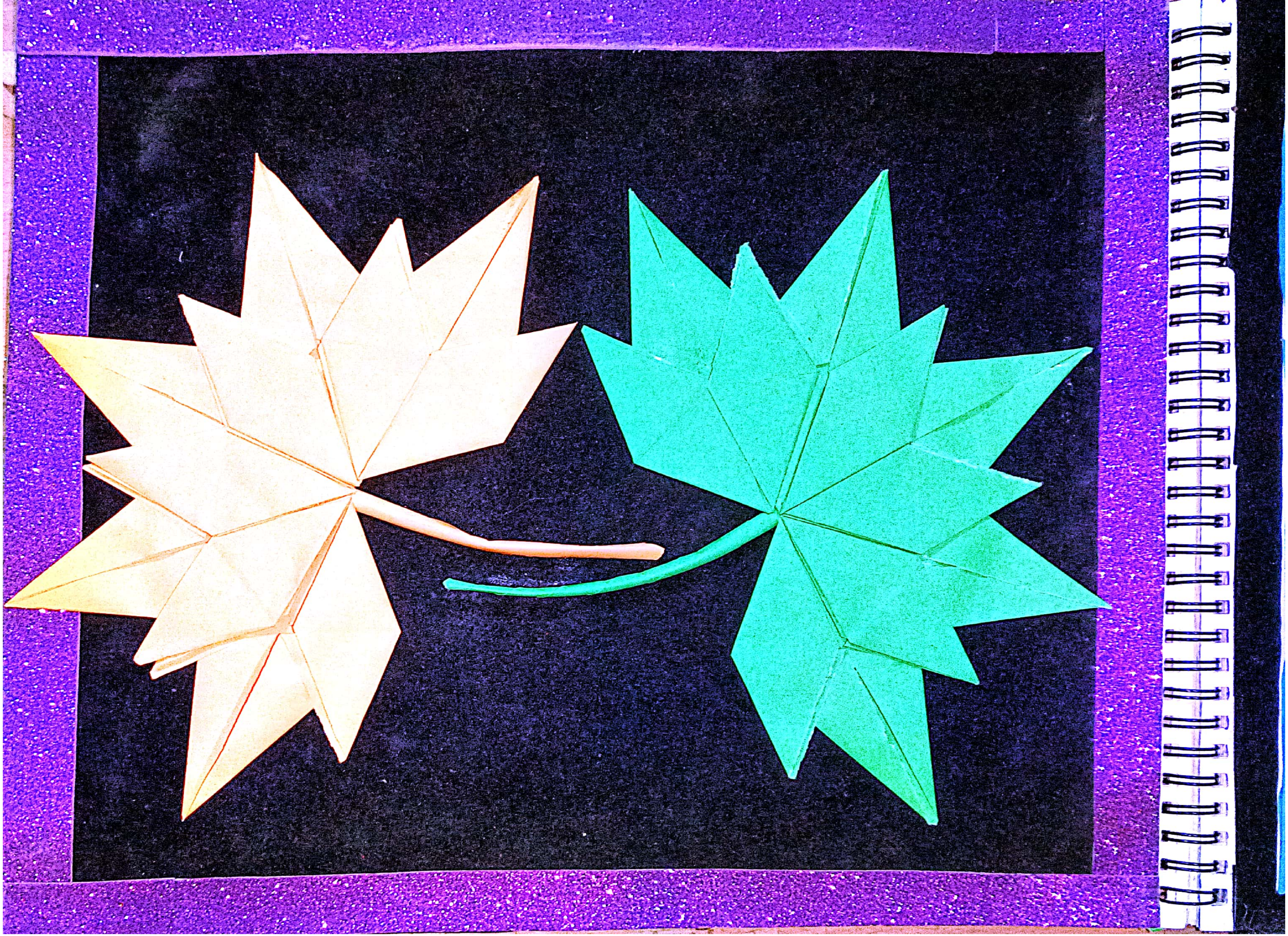

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

बिहार के लोक नृत्य एवं नाट

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

INTRODUCTION OF BIHAR DANCE

Dance is a form of art that involves rhythmic body movements that accompany music it can be a Form of Self - expression and recreation, or it can be a competitive activity. Dance has been a part of human culture, rituals, and celebration since ancient times...

ESTD 2010 Samastipur

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

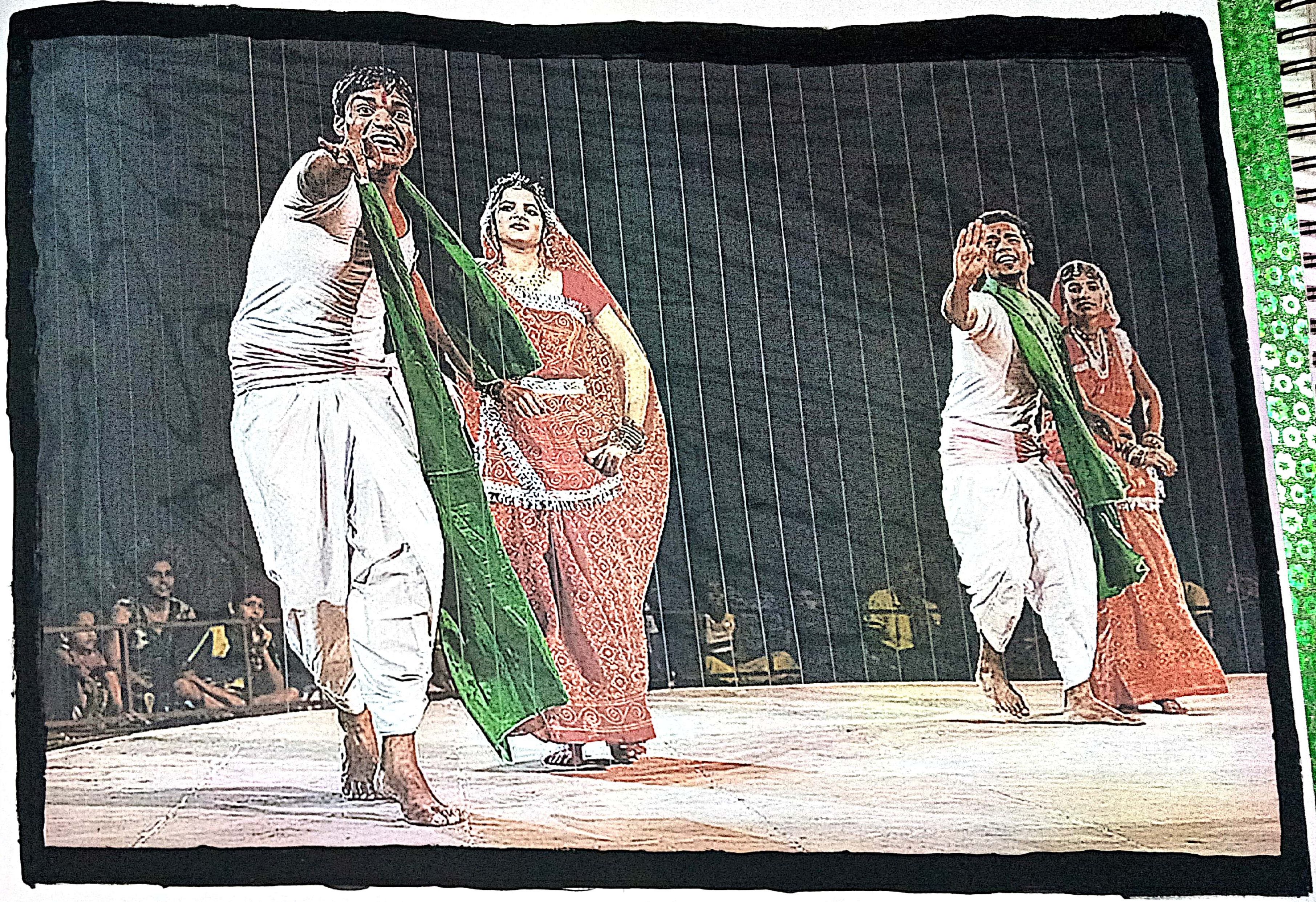

Scanned with OKEN Scanner

जट - जटिन नृत्य

बिहार में विशेष रूप से उत्तर बिहार में जाट जटिन नृत्य मिथिला और कोशी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह नृत्य बारिश के लिए एक प्रार्थना के साथ शुरू होता है। इसमें दो नाचने की टोली होती है, जो नाच - गान करके, नोंक झोंक करके, मान - मनौवल करके सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करते हैं।

विशेषताएँ :-

- जट - जटिन नृत्य के मूल विषय में प्रेमी जट और जटिन की कहानी बताई गई है, जो अलग हो गए थे और कठिन परिवेश में रहते थे।
- महिलाओं का नृत्य जट जटिन मानसून के मौसम के दौरान चांदनी रात में किया जाता है।
- इस नृत्य के माध्यम से, गरीबी, दुःख, प्रेम, प्रेमियों या पति - पत्नी के बीच बहस जैसे विभिन्न सामाजिक रूप से संबंधित विषयों का भी मंचन किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

झिझिया नृत्य

झिझिया मिथिला का एक प्रमुख लोक नृत्य है। दुर्गा पूजा के मौके पर इस नृत्य में लड़कियां बढ़-पढ़ कर हिस्सा लेती है। इस नृत्य में कुवारी लड़कियां अपने सिर पर जलते दिए एवं छिद्र वाली घड़ा को लेकर नाचती हैं। झिझिया नृत्य राजा चित्रसेन एवं उनकी रानी के प्रेम प्रसंगों पर आधारित है।

"नृत्य"

इंसान तो महज
एक कठपुतली है,
जो जीवन ताल पर
नृत्य करने को मजबूर
होता है।।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

झुमरी नृत्य

भारतीय राज्य बिहार में सबसे प्रसिद्ध नृत्यों में से एक है झुमरी नृत्य पूर्वी, चंपारण का व्यापक रूप से जाने वाला नृत्य है। इन नृत्यों का स्थानीय विरासत और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है।

यह नृत्य गुजराती गरबा नृत्य के बराबर है। यह नृत्य शैली विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए बनाई गई है। भारतीय राज्य बिहार में सबसे प्रसिद्ध नृत्यों मे से एक है झुमरी नृत्य। इन नृत्यों का स्थानीय विरासत और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है।

यह नृत्य गुजराती गरबा नृत्य के बराबर है। यह नृत्य शैली विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए बनाई गई है। मूलतः झुमरी नृत्य एक सामुदायिक नृत्य है जो समूहों में किया जाता है। यह नृत्य कुछ त्योहारों के दौरान और फसल के मौसम के दौरान किया जाता है। यह मुख्यतः बड़े एवं विशाल खुले स्थानों में किया जाता है।

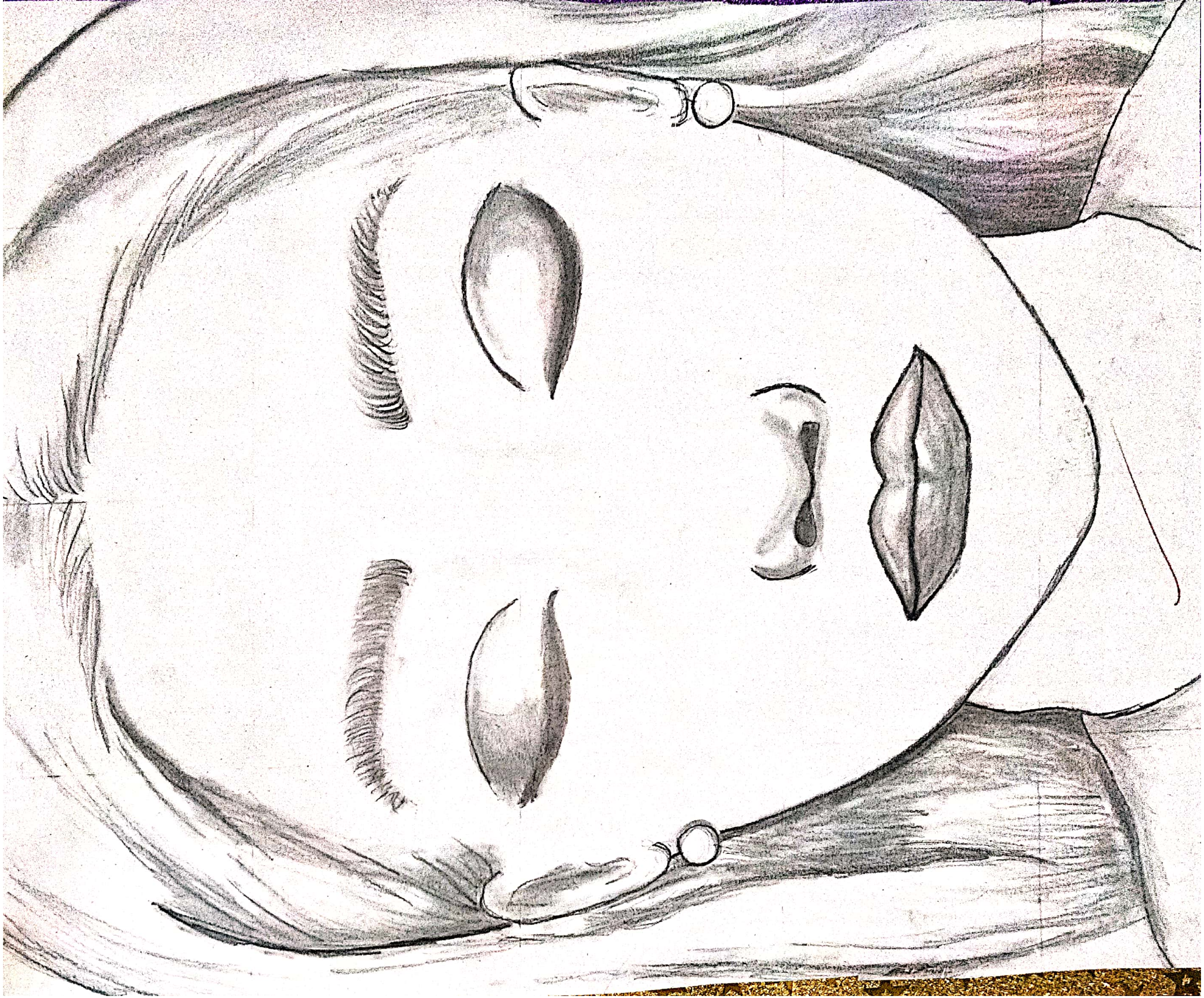

Scanned with OKEN Scanner

Drama

(नाटक)

Scanned with OKEN Scanner

Introduction :-

जीवन एक नाटक है: ईश्वर द्वारा लिखा गया है कुछ लोग कहते हैं और इसका एहसास हमने किया है। हम सभी जानते हैं।

नाटक, एक स्टैंडअलोन अवधारणा के रूप में और साहित्य के दायरे में कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण महत्व रखता है। यह एक ऐसी शैली है जो मंच पर पात्रों के अभिधान के माध्यम से एक कथा प्रस्तुत करती है।

जिसमें अक्सर संवाद, क्रियाएं और संघर्ष शामिल होते हैं जो दर्शकों के सामने प्रकट होते हैं। साहित्य के क्षेत्र में, नाटक अक्सर प्रदर्शन के लिए लिखे गए लिखित कार्यों को संदर्भित करता है, जिसमें नाटक और नाटकीय स्क्रिप्ट शामिल होती हैं; जिन्हें एक मंच पर अभिनेताओं द्वारा अभिनय करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

हैं और
जानते
धारणा के
आभिव्यक्ति
एक ऐसी
के माध्यम

और संघर्ष
होते हैं।
के लिए
है
होती हैं,
अभिनय करने के

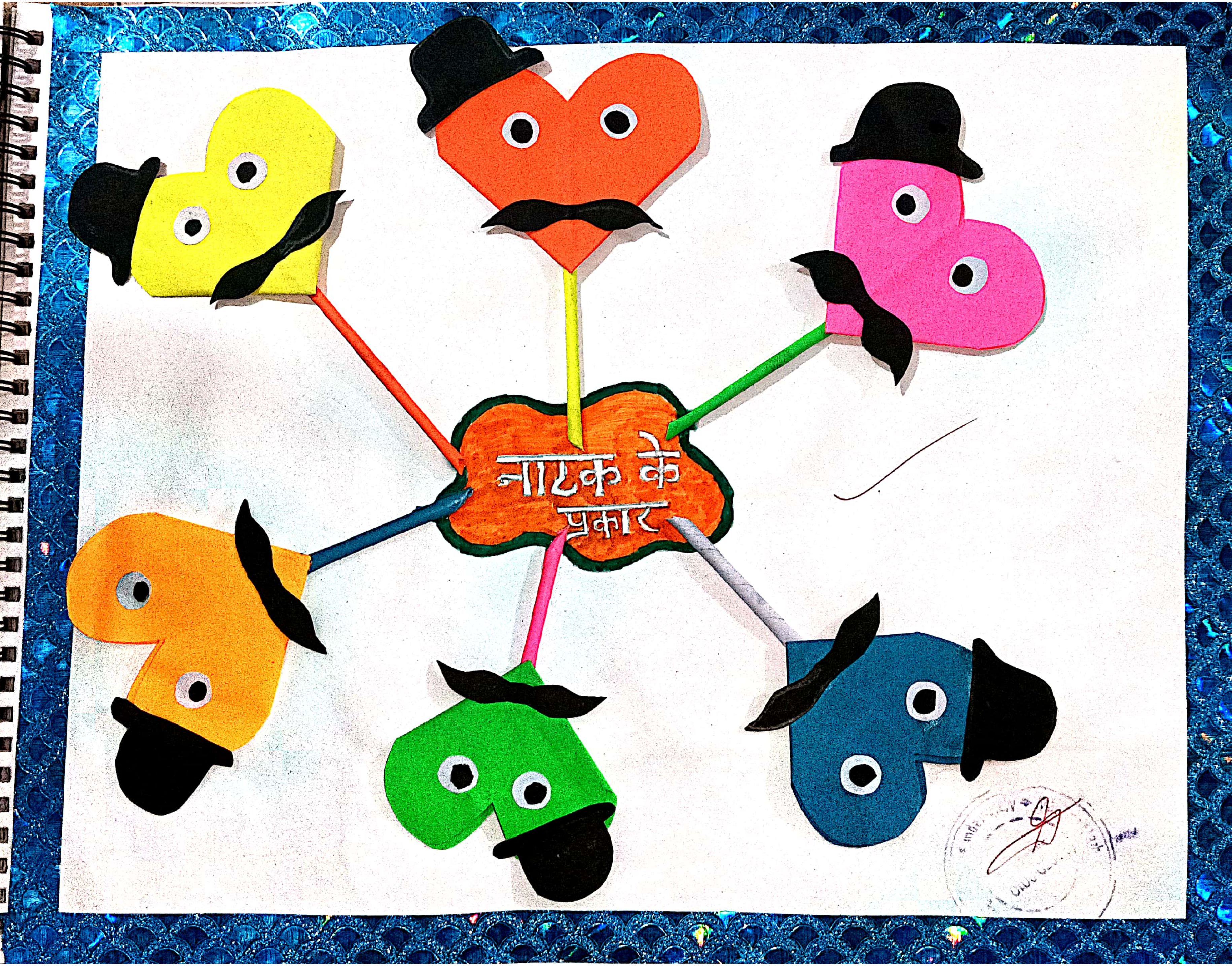

Scanned with OKEN Scanner

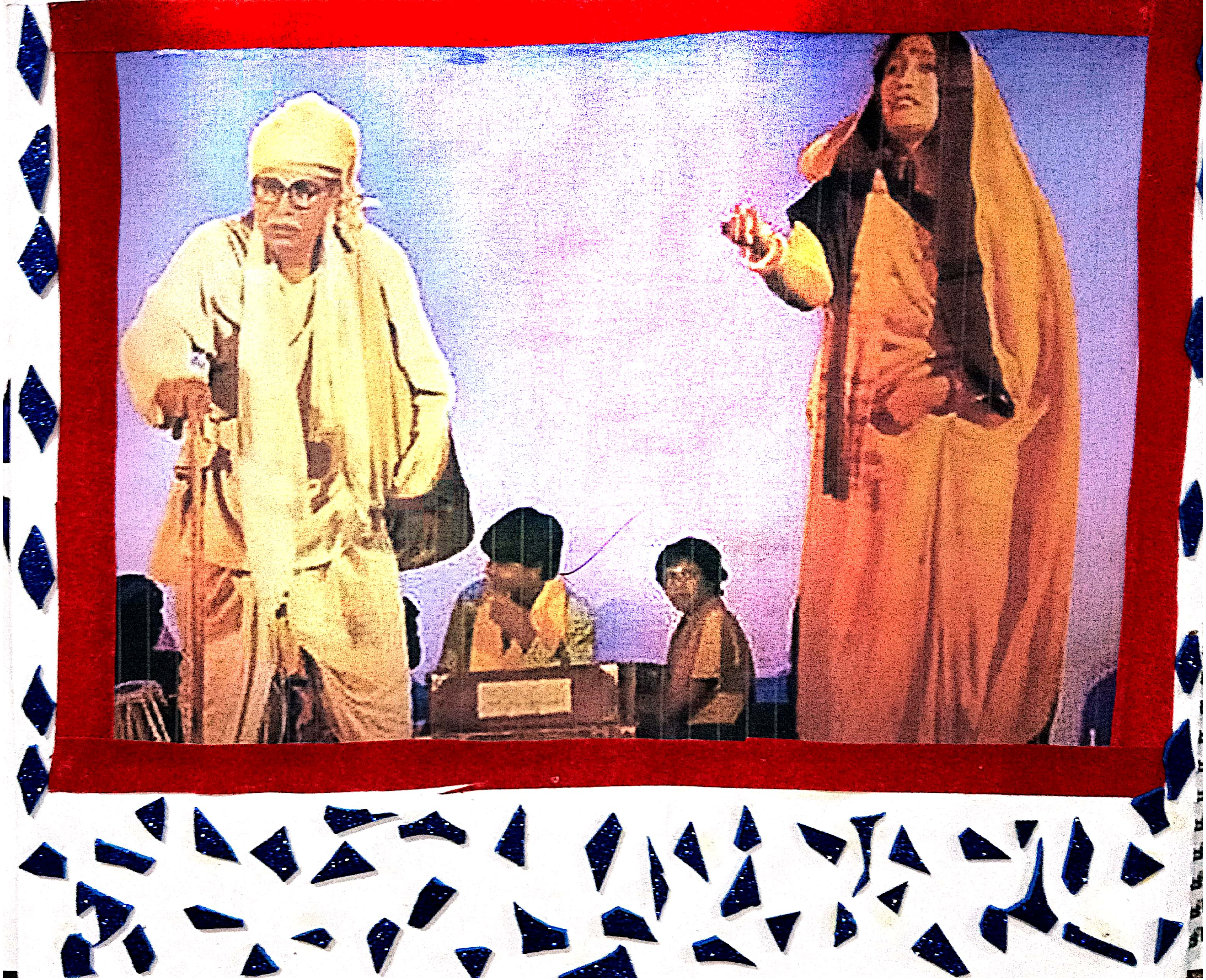

Scanned with OKEN Scanner

बिदेसिया नाट्य

बिदेसिया भोजपुरी नाटककार भिखारी ठाकुर का एक भोजपुरी नाटक है। यह भिखारी ठाकुर द्वारा महिला सशक्तिकरण, प्रवासन और गरीबी पर लिखे गए कई नाटकों में से एक है। इसकी लोकप्रियता के कारण यह भोजपुरी क्षेत्र की लोक नाट्य शैली बन गई, कुछ विद्वानों ने इसे उन दिनों रामायण जितना लोकप्रिय होने का भी दावा किया है।

आपकी बेहतर जानकारी के लिए बता दें कि जो लोग गाँव छोड़कर शहर आते हैं, उन्हें बिदेसिया के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार ऐसे ही एक व्यक्ति थे, भिखारी ठाकुर। वह एक प्रसिद्ध लोक कलाकार और नाटककार थे। ठाकुर ने बिदेसिया सहित बारह नाटक और बहुत सारे गीत लिखे हैं।

ध्यान रहे की बिदेसिया की यह कला शैली हिंदू जाती प्रथा की तथाकथित निचली जाती से संबंधित था। इस कथा शैली का सार समाज की बुराइयों पर प्रकाश डालना है और इसलिए इसमें पोशाक को कम महत्व दिया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

COLLEGE UNIFORM

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सामा चकेवा नाटक

सामा - चकेवा लोकनाट्य बिहार में प्रत्येक वर्ष कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की सप्तमी से पूर्णमासी तक किया जाता है। इस लोकनाट्य में कुमारी कन्याओं के द्वारा अभिनय प्रस्तुत किया जाता है। अभिनय में 'सामा' अर्थात श्यामा तथा चकेवा की भूमिका निभाई जाती है। सामूहिक रूप से गाए जाने वाले गीतों में प्रश्नों एवं उत्तरो के माध्यम से विषयवस्तु प्रस्तुत की जाती है।...

इस लोकनाट्य में पात्रो को मिट्टी द्वारा बनाया जाता है लेकिन उनका अभिनय बालिकाओ द्वारा किया जाता है।

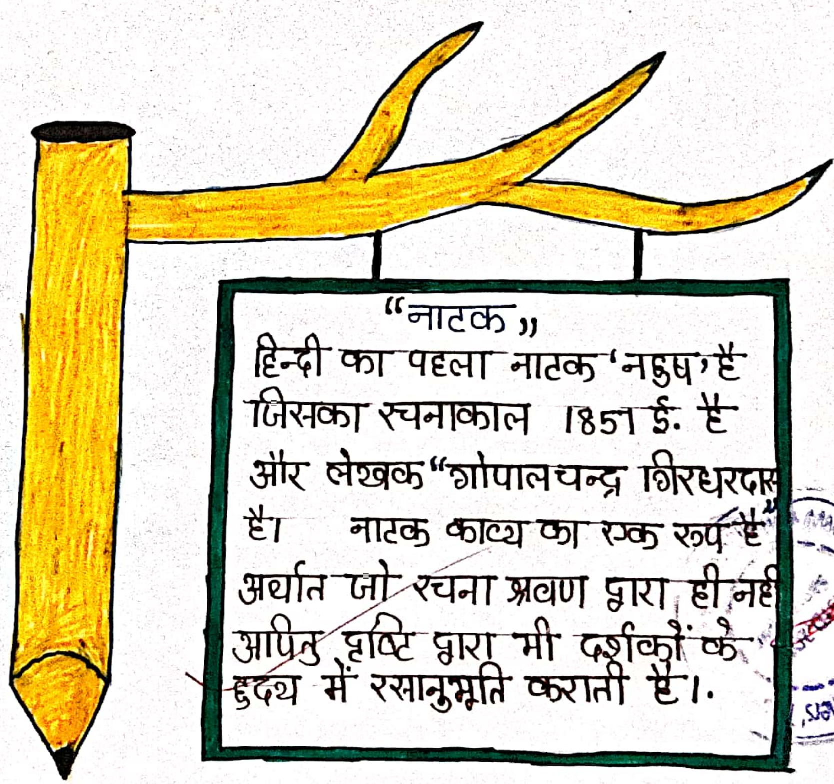

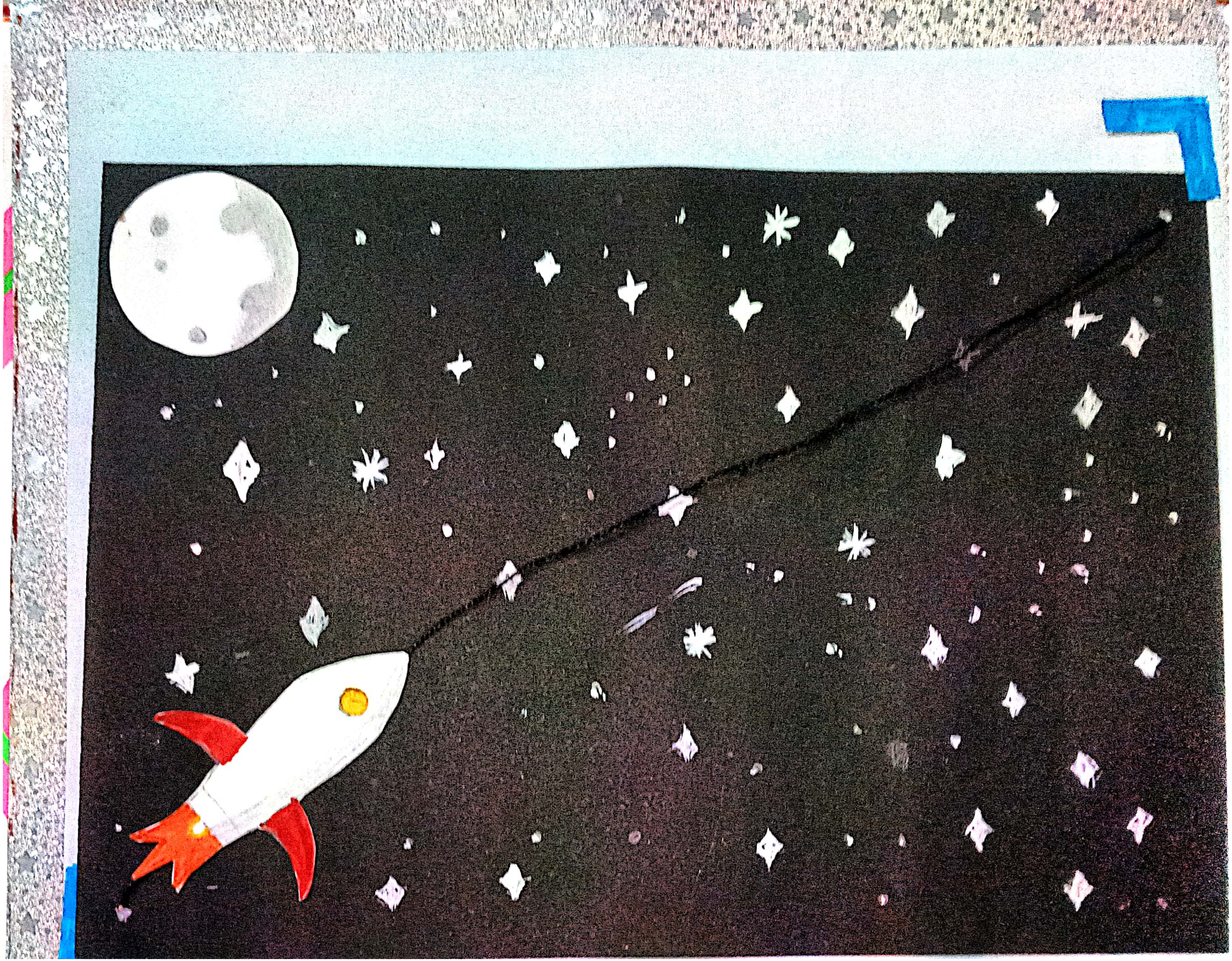

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

डोमकच नाट्य

डोमकच भारतीय राज्यों बिहार और झारखंड का एक लोक नाट्य है। बिहार में डोमकच नाट्य मिथि[ला] और भोजपुर क्षेत्रों में किया जाता है।

डोमकच नृत्य का चलन ज्यादातर अगहन से आषाढ़ महीने तक होता है। यह एक सामूहिक रूप मे किया जाने वाला नाट्य है। जिसमे युवक एवं युवतियाँ दोनों भाग लेते है। ये नाट्यकार रात भर डोमकच नाट्य करते है।

Scanned with OKEN Scanner

Thank you

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College ★ Mathurapur ★
ESTD 2010
Samastipur

Scanned with OKEN Scanner